IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 30, Issue 5, Series 1 (May, 2025) 110-115
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

सांध्य समाचार–पत्रों की सामाजिक उत्तरदायित्व भावना : 'नित्य हलचल' के विशेष संदर्भ में

मुकुट कुमार अग्रवाल
शोधार्थी, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी–बड़ी, झुंझुनूं (राजस्थान)

डॉ. आरती रानी प्रजापति
शोध–निर्देशक, सह आचार्य, हिंदी विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी–बड़ी, झुंझुनूं (राजस्थान)

डॉ. रामनिवास 'मानव'
सह शोध–निर्देशक, आचार्य, हिंदी विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी–बड़ी, झुंझुनूं (राजस्थान)

शोध–सारांश

हिन्दी पत्रकारिता भारतीय समाज में जनचेतना, लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व की वाहक रही है। विशेष रूप से सांध्य समाचार–पत्रों ने तात्कालिक घटनाओं, स्थानीय समस्याओं तथा जनभावनाओं को अभिव्यक्ति देने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। प्रस्तुत शोध पत्र में 'नित्य हलचल'दैनिक हिन्दी सांध्य समाचार–पत्र के विशेष संदर्भ में हिन्दी सांध्य पत्रकारिता की सामाजिक उत्तरदायित्व भावना का अध्ययन किया गया है।

भूमिका के रूप में यह कहा जा सकता है कि हिन्दी सांध्य समाचार–पत्र भारतीय पत्रकारिता की एक महत्त्वपूर्ण धारा रहे हैं, जिन्होंने स्थानीय समाज, जनसमस्याओं और तात्कालिक घटनाओं को तत्काल जनता तक पहुँचाने का कार्य किया। हरियाणा से प्रकाशित 'नित्य हलचल' दैनिक हिन्दी सांध्य समाचार पत्र ने क्षेत्रीय पत्रकारिता में सामाजिक सरोकार, जनजागरण और उत्तरदायी पत्रकारिता की एक विशिष्ट पहचान निर्मित की। इसी आधार पर प्रस्तुत शोध–पत्र तैयार किया गया है।

शोध में यह विश्लेषित किया गया है कि किस प्रकार 'नित्य हलचल'ने सामाजिक सरोकारों, जनसमस्याओं, ग्रामीण मुद्दों, सांस्कृतिक चेतना और लोकतांत्रिक मूल्यों को अपने समाचारों एवं संपादकीय दृष्टिकोण में स्थान दिया। अध्ययन के अंतर्गत विषयवस्तु विश्लेषण, ऐतिहासिक पद्धति तथा वर्णनात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। शोध से यह स्पष्ट होता है कि 'नित्य हलचल'ने केवल समाचार प्रसारण का कार्य नहीं किया, बल्कि समाज में जनजागरण, सामाजिक समन्वय तथा लोकतांत्रिक चेतना के विकास में सक्रिय भूमिका निभाई।

मुख्य शब्दः *हिन्दी पत्रकारिता, सांध्य समाचार–पत्र, सामाजिक उत्तरदायित्व, नित्य हलचल, हरियाणा पत्रकारिता, जनजागरण।*

प्रस्तावना

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। इसका प्रमुख उद्देश्य केवल समाचार देना नहीं, बल्कि समाज को दिशा प्रदान करना, जनमत का निर्माण करना तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करना भी है। भारतीय हिन्दी पत्रकारिता ने स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था तक समाज को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समाचार–पत्र सामाजिक परिवर्तन के सशक्त माध्यम रहे हैं। सांध्य समाचार–पत्र विशेष रूप से तत्कालीन घटनाओं, स्थानीय समस्याओं तथा जनभावनाओं को शीघ्रता से प्रस्तुत करने के कारण लोकप्रिय रहे। इन पत्रों की विशेषता यह रही कि ये जनता के दैनिक जीवन से सीधे जुड़े मुद्दों को प्रमुखता देते थे।

हिसार की भूमि से श्रीमती कान्ता भारती द्वारा प्रकाशित, सम्पादित 'नित्य हलचल' समाचार–पत्र ने पत्रकारिता के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और पत्रकारिता–जगत् में नये आयाम स्थापित किये। सन् 1991 में प्रारम्भ हुए इस सांध्य दैनिक का अपना विशिष्ट गैटअप था। इसमें 'फलश लेफ्ट' विधि द्वारा शीर्षक बाक्स में बाँई ओर लिखा जाता था। इसमें 'संक्षेप' शीर्षक से कुछ समाचारों को संक्षेप में छापा जाता है। दूसरे पृष्ठ पर विज्ञापन के साथ–साथ 'हलचल'के जन–जागृति अभियान को स्थान दिया जाता था। तीसरे पृष्ठ पर प्रतिदिन भिन्न संस्करण छपते थे। महिला–जगत, स्वास्थ्य–जगत, बाल–जगत, दूरदर्शन–जगत, फिल्म–जगत आदि नाम से ये संस्करण निकलते थे। चौथे

पृष्ठ पर कार्टून कोना, ताई छन्नो, शेयर, नायिका के फोटो के साथ काव्यांश, पंचांग, अमतृवाणी, टी0वी0, फिल्में आदि को स्थान दिया जाता था।

सांध्य 'नित्य हलचल' ने सामाजिक समस्याओं, प्रशासनिक अनियमितताओं, ग्रामीण जीवन, किसान समस्याओं, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा स्थानीय संस्कृति से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से प्रकाशित किया। इस प्रकार यह केवल समाचार पत्र नहीं रहा, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का सक्रिय माध्यम बनकर उभरा।

हिन्दी सांध्य समाचार–पत्रों की अवधारणा

सांध्य समाचार–पत्र वे पत्र होते हैं जो प्रायः दोपहर अथवा शाम के समय प्रकाशित होते हैं और दिनभर की घटनाओं को तत्काल पाठकों तक पहुँचाते हैं। भारत में सांध्य पत्रकारिता का विकास महानगरों से प्रारम्भ हुआ, परन्तु बाद में क्षेत्रीय स्तर पर भी इसका विस्तार हुआ।

हिन्दी सांध्य समाचार–पत्रों की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- तात्कालिक समाचारों का प्रकाशन
- स्थानीय घटनाओं पर विशेष ध्यान
- जनसमस्याओं की प्रमुख प्रस्तुति
- सरल एवं प्रभावशाली भाषा
- जनमत निर्माण में सक्रिय भूमिका
- सामाजिक सरोकारों पर केन्द्रित दृष्टिकोण

सांध्य समाचार–पत्रों ने विशेष रूप से शहरी एवं अर्धशहरी क्षेत्रों में सामाजिक चेतना के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इन पत्रों ने प्रशासन और जनता के मध्य संवाद स्थापित करने का कार्य किया।

सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा

पत्रकारिता का सामाजिक उत्तरदायित्व सिद्धांत यह मानता है कि मीडिया को केवल व्यावसायिक लाभ तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसे समाज के प्रति उत्तरदायी भूमिका निभानी चाहिए। सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत पत्रकारिता का दायित्व है कि वह–

- सत्य एवं निष्पक्ष समाचार प्रस्तुत करे
- जनहित के मुद्दों को उठाए
- लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करे
- सामाजिक समरसता को बढ़ावा दे
- भ्रष्टाचार एवं अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाए
- समाज में जागरूकता उत्पन्न करे

इसी आधार पर हिन्दी सांध्य समाचार–पत्रों की भूमिका का मूल्यांकन किया जाता है।

सांध्य 'नित्य हलचल' : परिचय एवं विकास

सांध्य 'नित्य हलचल' हरियाणा के हिसार से प्रकाशित एक प्रभावशाली हिन्दी सांध्य दैनिक समाचार–पत्र था। यह पत्र विशेष रूप से स्थानीय समाचारों, जनसमस्याओं तथा सामाजिक मुद्दों की निर्भीक प्रस्तुति के लिए जाना जाता था। क्षेत्रीय पत्रकारिता में इसकी विशिष्ट पहचान थी। शोध के अनुसार 'नित्य हलचल' हरियाणा की हिन्दी पत्रकारिता के विकास में महत्वपूर्ण माध्यम रहा।'नित्य हलचल' की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थीं–

- स्थानीय समाचारों को प्राथमिकता
- जनहित से जुड़े मुद्दों का प्रकाशन
- प्रशासनिक भ्रष्टाचार पर आलोचनात्मक दृष्टि
- ग्रामीण एवं किसान समस्याओं की प्रस्तुति
- सामाजिक चेतना एवं जनजागरण
- सरल और जनसामान्य की भाषा का प्रयोग

सांध्य 'नित्य हलचल' की सामाजिक उत्तरदायित्व भावना

सांध्य 'नित्य हलचल' बेहद चौकसी के साथ पत्रकारिता के धर्म का निर्वाह करते हुए समाज के पहरुए बनकर समाज को न केवल जानने का पूरा अधिकार दिया बल्कि पाठक वर्ग के प्रति अपनी विश्वसनीयता भी साबित की। विशिष्ट आलेख के माध्यम से 'नित्य हलचल' ने उन विषयों पर भी जनता से संवाद स्थापित किया है जो अनछुए रह जाते हैं। समाजिक जीवन में जिन मुद्दों पर सटीक हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है और जिस दृष्टिकोण पर समाजिक जीवन की निर्भरता होती है, उनके बारे में जनता को उचित जानकारी प्रदान करना, उनके संबंध में जनमत का निर्माण और नेतृत्व करना, उस मत को प्रकट करना तथा उसे अधिक से अधिक लाभ जनता को पहुंचाना ही 'नित्य हलचल' का प्रथम कर्तव्य रहा है।

1. जनसमस्याओं को स्वर प्रदान करना

'नित्य हलचल' ने आम जनता की समस्याओं को प्रमुखता से प्रकाशित किया। सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा प्रशासनिक अनियमितताओं जैसे मुद्दों को समाचारों में स्थान देकर यह पत्र जनता की आवाज बना। समाचार पत्र का यह स्वरूप सामाजिक उत्तरदायित्व का महत्वपूर्ण उदाहरण है क्योंकि पत्रकारिता का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं बल्कि समस्याओं को शासन तक पहुँचाना भी होता है।

2. ग्रामीण एवं किसान मुद्दों की प्रस्तुति

हरियाणा कृषि प्रधान राज्य है। 'नित्य हलचल' ने किसानों की समस्याओं, सिंचाई संकट, फसल मूल्य, कृषि नीतियों तथा ग्रामीण विकास के मुद्दों को प्रमुखता दी। इससे ग्रामीण समाज की समस्याएँ सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनीं। ग्रामीण पत्रकारिता के माध्यम से इस पत्र ने सामाजिक न्याय और आर्थिक संतुलन की दिशा में योगदान दिया।

3. सामाजिक जागरूकता का विकास

सांध्य 'नित्य हलचल' ने शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, स्वच्छता तथा सामाजिक सुधार से जुड़े विषयों पर नियमित लेख एवं समाचार प्रकाशित किए। इससे समाज में जागरूकता का विकास हुआ। पत्रकारिता की सामाजिक भूमिका केवल राजनीतिक समाचारों तक सीमित नहीं होतीय सामाजिक चेतना का निर्माण भी उसका महत्त्वपूर्ण कार्य है। इस दृष्टि से 'नित्य हलचल' की भूमिका उल्लेखनीय रही।

4. लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा

लोकतंत्र में मीडिया का दायित्व सरकार और जनता के बीच सेतु का कार्य करना है। 'नित्य हलचल' ने स्थानीय प्रशासन की कमियों, भ्रष्टाचार तथा जनविरोधी नीतियों पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया। इस प्रकार समाचार पत्र ने लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करते हुए जनता को जागरूक बनाया।

5. सांस्कृतिक चेतना का संरक्षण

सांध्य 'नित्य हलचल' ने हरियाणा की लोकसंस्कृति, लोकभाषा, सामाजिक परंपराओं तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को समाचारों में स्थान दिया। इससे क्षेत्रीय सांस्कृतिक पहचान को संरक्षण मिला। क्षेत्रीय पत्रकारिता का यह महत्वपूर्ण पक्ष है कि वह स्थानीय संस्कृति और समाज को अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

6. निष्पक्ष एवं जनोन्मुख पत्रकारिता

पत्रकारिता का मूल आधार निष्पक्षता और सत्य है। 'नित्य हलचल' ने स्थानीय स्तर पर निष्पक्ष समाचार प्रस्तुति का प्रयास किया। इसकी भाषा सरल, सहज और जनसामान्य के निकट थी। इस प्रकार यह पत्र व्यावसायिकता से अधिक जनहित की पत्रकारिता का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

हिन्दी सांध्य पत्रकारिता की चुनौतियाँ

हिन्दी सांध्य पत्रकारिता भारतीय पत्रकारिता की एक महत्वपूर्ण धारा रही है। इसने स्थानीय समाचारों, जनसमस्याओं और सामाजिक सरोकारों को अभिव्यक्ति प्रदान की। 'नित्य हलचल' जैसे समाचार पत्रों ने क्षेत्रीय पत्रकारिता को जनोन्मुख स्वरूप दिया तथा लोकतांत्रिक चेतना को मजबूत किया। किन्तु बदलते मीडिया परिवेश, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, डिजिटल पत्रकारिता, आर्थिक संकट और पाठकों की बदलती प्रवृत्तियों ने सांध्य समाचार पत्रों के अस्तित्व को चुनौती दी है।

इसके बावजूद क्षेत्रीय पत्रकारिता का महत्व आज भी बना हुआ है। स्थानीय समाचारों की विश्वसनीयता, जनसरोकारों की प्रस्तुति तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना सांध्य पत्रकारिता की प्रमुख शक्तियाँ हैं। यदि सांध्य समाचार पत्र आधुनिक तकनीक और डिजिटल प्लेटफॉर्म को अपनाएँ, तो वे भविष्य में भी प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।

'नित्य हलचल' हिन्दी सांध्य पत्रकारिता की उसी परंपरा का महत्वपूर्ण उदाहरण है जिसने सीमित संसाधनों के बावजूद समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन किया। यद्यपि सांध्य समाचार पत्रों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, फिर भी उन्हें अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ाकृ

- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव
- डिजिटल पत्रकारिता का विस्तार
- आर्थिक संकट एवं विज्ञापन समस्या
- पाठकों की बदलती रुचियाँ
- समाचारों की तात्कालिक प्रतिस्पर्धा
- व्यावसायिकता का बढ़ता प्रभाव

इन चुनौतियों के बावजूद 'नित्य हलचल' जैसे समाचार पत्रों ने सामाजिक उत्तरदायित्व को प्राथमिकता देने का प्रयास किया।

सांध्य 'नित्य हलचल' : पत्रकारिता की नई परिपाटी

अखबार का मालिक और संपादक जब एक ही हो तो उसकी योग्यता की कसौटी और भी कड़ी हो जाती है। जब योग्य संपादक, पत्र के मालिक भी होते हैं तो समाचार पत्र की नीतियों से समझौता नहीं हो पाता, यही उस पत्र की सबसे बड़ी शक्ति भी है। व्यवसायिकता और पत्रकारिता के द्वंद्व को नकारते हुए सांध्य 'नित्य हलचल' ने समाज और राष्ट्र हित में अपनी लेखनी के माध्यम से सदैव पत्रकारीय मूल्यों का ही समर्थन किया है। समाज और पूंजी के बीच सेतु के रूप में परिभाषित आधुनिक संपादक आज भले एक मरती हुई संस्था के रूप में जाना जाता है, लेकिन तीन दशक पूर्व प्रकाशित नित्य हलचल ने संपादक नामक इस संस्था की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित किया था।

समाज के सारे आक्रमणों को स्वयं झेलकर जोखिम पूर्ण पत्रकारिता करते हुए अपनी बौद्धिक कृति से समाज में विखंडनकारी ताकतों का प्रतिरोध करते हुए प्रगतिशील ताकतो को बढ़ावा देने वाला यह पत्र साधारण लोगों से सीधे जुड़ा हुआ था।

एक ओर जहाँ यथार्थ, आदर्श और विस्तार का संकट हिंदी पत्रकारिता के गले की फाँस बनकर नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रहा था, वहीं दूसरी ओर नवजागरण का अग्रदूत बना 'नित्य हलचल' पत्रकारिता की एक नई परिपाटी का निर्माण करता हुआ, साहित्य और पत्रकारिता के उज्ज्वल साँझे मंच पर बैठकर समाज की दशा और दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था।

कुछ लोग हिंदी पत्रकारिता के दुर्भाग्य की बात करते हुए कहते हैं कि जब उसके पास विचार था तब समाचार नहीं था और जब समाचार आया तो विचार नदारद हो गया, लेकिन नित्य हलचल, समाचार और विचार दोनों की टकसाल रहा है। सतही और व्यावसायिक लगावों की क्षुद्र, समकालीन दुनिया की कीचड़ में नित्य हलचल उस कमल के समान शोभायमान रहा है, जिसको यह कलुषित परंपरा छू भी नहीं पाई।

नदी की तरह अपने स्थापित आदर्शों और सिद्धांतों की सीमा रेखा का अतिक्रमण किए बिना प्रवाहित होकर नित्य हलचल की पत्रकारिता ने सदैव समाज की अनुपजाऊ, बंजर विचारधारा की शुष्क भूमि पर आशा और विश्वास के नवांकुर संचित करते हुए उसे शस्य–श्यामला किया है।

सांध्य 'नित्य हलचल' : सतर्क, सजग तथा सक्रिय प्रहरी

'नित्य हलचल' की विचारधारा और नीति, स्पष्ट तथा निष्पक्ष रही है। प्रशासन तथा सिस्टम की कमियों को उजागर करते हुए उन्हें दर्पण दिखाकर, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से जनता को राहत दिलाना ही शनित्य हलचलश की विशेषता रही है। अभिव्यक्ति की आजादी का सही अर्थ नित्य हलचल समाचार पत्र की कार्यशाली को देखकर समझ सकते हैं।

मिशनरी भावना से चलने वाले इस पत्र का उद्देश्य प्रारंभ से ही राष्ट्र निर्माण तथा समाज सेवा का रहा है भले ही परिस्थितियों कितनी भी प्रतिकूल क्यों ना रही। राजनीतिक समाचारों के अलावा छात्रों की समस्याएँ, युवाओं की समस्याएँ, महिलाओं बुजुर्गों तथा समाज के अनेक वर्गों जैसे चिकित्सक, अधिवक्ता, शिक्षक, कृषक, मजदूर, दुकानदार,

नौकरीपेशा, बुनकर सहित तमाम समुदायों के हित में सांध्य 'नित्य हलचल' समाचार–पत्र सदैव सतर्क, सजग तथा सक्रिय प्रहरी की भूमिका निभाता रहा है।

'नित्य हलचल' ने अपनी निष्पक्ष, स्वच्छ तथा कर्मठ जनहित छवि के साथ पत्रकारिता के समस्त जीवन मूल्यों का संरक्षण तथा संवर्धन करते हुए पुनः प्रतिस्थापित करने का अनुपम और साहसिक कार्य, निराशा के उस दौर में किया, जब पत्रकारिता और पत्रकारों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता था।

पत्रकार साहित्यकार की तरह मधुब्रती बनकर जीवन के बिखरे हुए सत्य का मात्र संचयन नहीं करता, वरन उसे देवर्षि नारद सा भ्रमणशील, संजय सा दूरदृष्टि संपन्न, अर्जुन सा लक्ष्यनिष्ठ, एकलव्य सा अध्यवसायी, अभिमन्यु सा निर्भीक, परशुराम सा साहसी, सुदामा सा संतोषी, दधीचि सा त्यागी, धर्मराज सा सत्यव्रती, भीष्म सा अडिग, गणेश सा प्रतिभा संपन्न, कृष्ण सा ज्ञानी एवं कर्मयोगी, राम सा मर्यादावादी, कृष्ण द्वैपायन सा प्रगतिशील और भगवान शिव सा लोकमंगल के लिए विषपाई होना पड़ता है। यह सभी गुण किसी एक में सम्मिलित होकर उसे सम्मानित पत्रकार बनाते हैं और ऐसा पत्रकार ही अपनी पत्रकारिता को अपने दायित्व बहुत को सामने ले जाकर सामाजिक सम्मान और संपादक का सच्चा अधिकारी बनता है।

पत्रकारिता की उपयुक्त कसौटी पर सांध्य 'नित्य हलचल' न सिर्फ खरा उतरा है बल्कि अनेक नई प्रतिमान भी स्थापित किए हैं। नित्य हलचल ने तत्कालीन पत्रकारों का तो मार्गदर्शन किया ही था, आज भी अपनी नीतियों तथा जीवन–मूल्यों से वर्तमान के साथ भावी पीढ़ी का साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक मार्गदर्शन कर रहा है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में निम्नलिखित शोध पद्धतियों का उपयोग किया गया है–

1. ऐतिहासिक पद्धति–'नित्य हलचल'के विकास, स्वरूप और पत्रकारिता योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन किया गया।

2. विषयवस्तु विश्लेषण– समाचारों, संपादकीय लेखों और सामाजिक मुद्दों का विश्लेषण किया गया।

3. वर्णनात्मक पद्धति– पत्रकारिता की सामाजिक भूमिका और उत्तरदायित्व का वर्णनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया।

निष्कर्ष–

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी सांध्य समाचार–पत्र केवल समाचार प्रसारण के माध्यम नहीं थे, बल्कि सामाजिक चेतना, लोकतांत्रिक मूल्यों और जनजागरण के महत्वपूर्ण साधन भी थे। 'नित्य हलचल'ने हरियाणा की क्षेत्रीय पत्रकारिता में सामाजिक उत्तरदायित्व की परंपरा को सशक्त किया।

इस समाचार–पत्र ने स्थानीय समस्याओं, ग्रामीण जीवन, किसान मुद्दों, सामाजिक सुधार और प्रशासनिक उत्तरदायित्व जैसे विषयों को प्रमुखता देकर पत्रकारिता को जनोन्मुख स्वरूप प्रदान किया। इसकी पत्रकारिता सामाजिक सरोकारों, निष्पक्षता और जनहित पर आधारित रही। डिजिटल युग में भले ही सांध्य समाचार पत्रों की संख्या कम हुई हो, परन्तु उनकी सामाजिक भूमिका और पत्रकारिता मूल्यों का महत्व आज भी बना हुआ है। 'नित्य हलचल' हिन्दी सांध्य पत्रकारिता की उसी उत्तरदायी परंपरा का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

शोषित–निर्बल को न्याय दिलाने और जनता की आवाज बनकर निंद्रालीन सत्तारूढ़ शासन को जगाने के मिशन से भटककर विशुद्ध व्यवसायिकता की ओर रुख कर रही पत्रकारिता के लिए यह शोध, संजीवनी स्वरूप होगा, जिससे पत्रकारिता पुनः प्राण प्रतिष्ठित होकर अपने उसी दिव्य स्वरुप को प्राप्त करने के लिए उद्धत होगी और जनमानस के मनोभावों के अनुरूप आचरण करते हुए लोकतंत्र के लिए वास्तव में चौथा स्तंभ साबित होगी।

हरियाणा की हिंदी पत्रकारिता की बात हो या हिंदी पत्रकारिता में 'नित्य हलचल' की भूमिका की या फिर हिंदी पत्रकारिता व साहित्य की बात ही क्यों ना हो पत्रकारिता में रुचि रखने वाले आगामी शोधार्थियों के लिए यह शोध–कार्य आधर संदर्भ के रूप में प्रतिष्ठित होगा। दुर्भाग्य से हरियाणा की पत्रकारिता पर बहुत कम शोध कार्य हुआ है। अगर कोई कार्य हुआ भी है तो समग्र पत्रकारिता पर हुआ है जो किसी विशेष समाचार पत्र पर केंद्रित नहीं है। लघु और मझले समाचार पत्र तो बिल्कुल ही उपेक्षित है, इन पर शोध कार्य करने का तो किसी ने विचार ही नहीं किया। 'नित्य हलचल' का कार्य देखकर दूसरे समाचार–पत्र भी अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित होंगे।

संदर्भ सूची

- Kumar, K. ¼2018½- Hindi patrakarita ka itihaas- New Delhi: Rajkamal Prakashan-
- Mishra, S. ¼2019½- Bhartiya patrakarita evam jan sanchar- Jaipur: Rajasthan Hindi Granth Academy-
- Pandey, R. ¼2020½- Media aur samajik uttardayitva- New Delhi: Vani Prakashan-
- Sharma, A. ¼2017½- Hindi patrakarita: Siddhant aur swaroop- Allahabad: Lokbharti Prakashan-
- Singh, P. ¼2021½- ÞRegional Journalism and Social Responsibility in India-ß Journal of Media Studies] 14¼2½] 45–58-
- Yadav, R. ¼2016½- Samachar patra aur janmat nirman- New Delhi: Sahitya Bhawan-
- संपादक कांता भारती से बातचीत के आधार पर
- सांध्य 'नित्य हलचल' की विभिन्न प्रतियाँ
- NCERT Class. ¼2021½- Samachar&patron ki upyogita- Retrieved from https://www-ncertclass-in
- Kumar, K. ¼2018½- Hindi patrakarita ka itihaas- New Delhi: Rajkamal Prakashan-
- Verma, N. ¼2019½- Digital media aur badalta samaj- New Delhi: Sage Publications India-
- Jain, S- ¼2022½- ÞChallenges of Regional Hindi Journalism in Digital Era-ß Indian Journal of Communication] 9¼1½] 77–91-
- Tripathi, D. ¼2020½- Regional media and social change- New Delhi: Concept Publishing House.